कल्याणकी आवश्यकता

सम्पादकका निवेदन

ल्याणकी आवश्यकता सबको है। जगत्‌में कौन ऐसा मनुष्य है जो अपना कल्याण नहीं चाहता? इसी आवश्यकताका अनुभव कर आज यह 'कल्याण' भी प्रकट हो रहा है। शुभ, मङ्गल, शिव और भद्र आदि कल्याणके पर्यायवाची शब्द हैं परन्तु इनका अर्थ करनेमें अपने अपने उद्देश्यके अनुसार बड़ा अन्तर डाल दिया जाता है। कोई स्त्री, पुत्र, धन, मान और बड़ाईकी प्राप्तिको शुभ मानते हैं तो कोई इन सबको त्यागकर निर्जन प्रदेशमें निवास करना ही शुभ समझते हैं, कोई पर-धन-अपहरणमें ही अपना मङ्गल मानते हैं तो कोई परार्थ अर्थके उत्सर्गको मङ्गल समझते हैं, इसप्रकार अपनी अपनी रुचिके अनुसार लोग कल्याणका भिन्न भिन्न अर्थ किया करते हैं, वास्तविक कल्याण किस वस्तुमें है इसका एक मतसे निर्णय आजतक नहीं हो सका है। परन्तु त्रिकालज्ञ ऋषि मुनियोंने, महात्माओंने और जगत्‌के बड़े बड़े धीमान् पुरुषोंने अपनी दिव्य दृष्टिसे "परमात्माकी आज्ञानुसार शुभ कर्म करते हुए अन्तमें परमात्माकी प्राप्ति कर लेनेको ही" परम कल्याण माना है। इसीको ब्रह्मवेत्ता महापुरुष मोक्ष कहते हैं, इसीको भक्तोंने अपनी रसीली वाणीसे श्यामसुन्दरका "अनन्य प्रेम" कहा है और यही सबका एक मात्र सम्पादनीय परम पुरुषार्थ है! यही एक ऐसा विषय है, जिसमें सबका समान अधिकार है, इसमें स्त्री-पुरुष और ब्राह्मण-शूद्रका कोई भेद नहीं! धन-ऐश्वर्य, रूप-गुण, विद्या-कला और वर्ण-जाति आदिसे यहां कुछ भी सम्बन्ध नहीं—यहां तो बस—

"जिसने उत्कट उत्कण्ठासे उस प्रियतमको बुलवाया।
उसने ही तत्काल उसे अपने समीपमें है पाया॥"

भगवान्‌ने श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है:—

"मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यांति परां गतिम्॥" ९।३२

"हे पार्थ! स्त्री वैश्य शूद्रादि या पापयोनि-वाले जो कोई भी हों, मेरे शरण होते ही वे परम गतिको प्राप्त होते हैं।" ९।३२

"पुरुष नपुंसक नारि नर जीव चराचर कोइ।
सर्वभाव भजि कपट तजि मोहिं परम प्रिय सोइ॥"

(गो० तुलसीदासजी)

"जिनका उस परमपिता परमात्मामें प्रेम है, जो जगत्‌के जीवमात्रको उस परमात्माकी प्रिय सन्तति समझकर सबसे "आत्मवत्" प्रेम करते हैं, जो उसकी आज्ञानुकूल अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, दया, दान, क्षमा, शौच, तप और सन्तोषादि व्रतोंको पालते हैं, जो निरन्तर उस प्रियतमकी त्रिभुवन मोहिनी मधुर मूरतिका ध्यान कर-उसके परम प्रेममय प्रभावको पलपलमें स्मरणकर, उसके पावन नाम और गुणोंका कीर्तन करते हुए अश्रुपूर्ण-लोचन और अवरुद्ध-कण्ठ होकर अपने आपको भूल जाते हैं, जो चन्द्र-सूर्य, नक्षत्र-अग्नि, व्योम-वायु, जल-स्थल, समुद्र-सरिता, वृक्ष-पर्वत, देवता-मनुष्य, यक्ष-राक्षस; और पशु-पक्षी आदि समस्त जड़ चेतनमें केवल उसीका प्रकाश देखते हैं और जो इन सबके भिन्न भिन्न रूपोंमें उसी एक अरूपका "नित्य रूप" दर्शन करते हैं बस, वे ही उसको प्राप्त करनेके अधिकारी हैं और उसे प्राप्त कर लेना ही

परम कल्याण है।" इसी बातका प्रचार करनेके लिये, उसी कल्याणके स्वामीकी पवित्र प्रेरणासे और कुछ कल्याणमय तथा कल्याणकामी महानुभावोंकी अनुमतिसे इस "कल्याण" का जन्म हुआ है!

जिसको इस "कल्याण"के सम्पादनका भार दिया गया है वह इस बातको भली भांति जानता है कि उसमें कल्याणके सम्पादनकी योग्यता और सामर्थ्य नहीं, वह अभी कल्याणसे दूर है परन्तु वह कल्याणकामी अवश्य है, इस "कल्याण"की किञ्चित् सेवासे उसकी कल्याण-कामनामें बहुत कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है, इसी विश्वाससे वह सब प्रकारसे अपनी अयोग्यताका अनुभव करता हुआ भी परमात्माकी पल पलपर प्रकट होनेवाली अपार अनुकम्पा और पूजनीय महापुरुषोंकी विशाल कृपाके भरोसे इस कार्यका भार उठा रहा है!

सम्पादकका विचार है कि इस "कल्याण" के द्वारा यथासम्भव उन प्रातःस्मरणीय ऋषि-मुनियों और महापुरुषोंकी दिव्य वाणीका ही प्रचार किया जाय जो अपने अलौकिक तेजसे पथभ्रष्ट पथिकोंको कल्याणके सुन्दर मार्गपर लानेमें समर्थ हैं! स्वलिखित लेखोंमें भी यथा-साध्य महापुरुषोंके वचनोंको ही आधार बनानेका विचार है। मनुष्यके विचारोंका कार्यमें परिणत होना प्रेरक प्रभुके आधीन है उस मङ्गलमयकी इच्छासे जो कुछ भी हो रहा है सो सभी कल्याण है, उसका कोई भी कार्य कल्याणसे रहित नहीं होता। विज्ञ पाठक और पाठिकाएं अनुग्रहपूर्वक अपने प्रेमका वह बल दें कि जिससे इस "कल्याण" का यह तुच्छ सम्पादक भी प्रभुकी प्रत्येक क्रियाको कल्याणमय समझनेके योग्य बन सके।

—सम्पादक

एक भरोसो एक बल, एक आश विश्वास।
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास॥
राम भरोसो राम बल, रामनाम विश्वास।
सुमिरि नाम मंगल कुशल, मांगत तुलसीदास॥
तब लगि कुशल न जीव कहं, सपनेहुं नहिं विश्राम।
जब लगि भजत न रामपद, शोकधाम तजि काम॥